त्रितः भग्नात्रे वित्रः त्यान्त्रीः रेग्रः याभ्यात्र्यात्र्यात्रेत् याभ्य त्यात्र्यात्रेत्

or: 09/00/22

तिकः त्याक्त्रीरम्। भगः क्ष्यम्प्राप्त भगः क्ष्यंभ्यात् (श्रुवः स्पृतं भ्रद्धन स्रम् : यह भन्न भियः = न्याण्येते दे अतं . अत्रः स्टब्स्युत् त्याः अर्थे व्यत्ति त्याः अर्थे व्यत्ति स्टबः व्यक्तिश्व स्थतः श्यिष्णः विश्वति स्थतः

get in your house less to tel south of the same of was seen 'a preliporithe inner the times of you muru en in ancelets vidor only Estangs (sue of 100 ml 15/1/10 Jul 2 nut may 10:30 (11: neut about any sutters or 2. 2. y a varent which & polar Exempt & suft in cour xui-July ent ce way man agar lagge and any-בושה לשו השות בעם אורם עול העם בושה הונה ולל מבינות אונה कि दि त्याम नाम का श्रीमिक अध्याम वेस अव स्थित स्पेक्टील -कि है कि का मिले ज्याम का का अध्या अध्या की स्था आहे। इंट्रिक का के अधि अधि अधि हो स्था का आहे होते के स्था क्यामिस -Et the sunt with a wall in wall of more num by we. E & are who was but now inous was down our gras some down sal (2 2 my mount sught at that who she styles 10 2 & (40) all benent (med & also enout eight (# (2 mys)) हैं द्वित्या क्षेत्र क्षेत्र त्वी। क्षेत्रक्षि क्षेत्रक्ष क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्रक्ष क्षेत्र क्षेत्रक क् after more of the मंद्रेय मध्या हुन लाग्य र्यंत्रियोत तथा प्रथम ות נפטה בלנות חול שות מצונים בל

Bachdru Mandal